एकादश माला, खंड 1, अंक 2

गुरूवार, 23 मई, 1
2 ज्येष्ठ, 1918 (श

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

पहला - सत्र

(ग्यारहवीं लोक सभा)

सत्यमेव जयते

(खण्ड 1 में अंक 1 से 5 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्यः पचास रूपये

सम्पादक मण्डल

श्री सुरेन्द्र मिश्र
महासचिव
लोक सभा

श्रीमती रेवा नैयर
संयुक्त सचिव
लोक सभा सचिवालय

श्री प्रकाश चन्द्र भट्ट
मुख्य सम्पादक
लोक सभा सचिवालय

श्री केवल कृष्ण
वरिष्ठ सम्पादक

श्रीमती वन्दना त्रिवेदी
सम्पादक

श्रीमती सरिता नागपाल
सहायक सम्पादक

श्री गोपाल सिंह चौहान
सहायक सम्पादक

श्री देवेन्द्र कुमार
सम्पादक

श्री मुन्नी लाल
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।)

विषय-सूची

एकादश माला, खंड 1 पहला सत्र, 1996/1918 (शक)
अंक 2, गुरुवार, 23 मई, 1996/2 ज्येष्ठ, 1918' (शक)

विषय	कालम
सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	1—2, 29
सदस्य द्वारा त्याग पत्र	2
अध्यक्ष का निर्वाचन	2—5
अध्यक्ष महोदय को बधाइयां	
श्री अटल बिहारी वाजपेयी	5—6
श्री पी.वी. नरसिंह राव	6—7
श्री शिवराज वी. पाटिल	7
श्री शरद यादव	7—8
श्री मुरासोली मारन	8—10
श्री सोमनाथ चटर्जी	10—11
श्री पी. चिदम्बरम	11—12
श्री बोल्ला बुल्ली रामय्या	12—13
श्री इन्द्रजीत गुप्त	13—14
श्री मुलायम सिंह यादव	14—15
श्री चित्त बसु	15—17
श्री बीरेन्द्र प्रसाद बैश्य	17
श्री नारायण दत्त तिवारी	17—18
श्री पी.सी. थामस	18—20
सरदार सुरजीत सिंह बरनाला	20
श्री नीतीश कुमार	20—21
श्री मधुकर सरपोतदार	21—22
श्री कांशी राम	22
श्री जी.एम. बनातवाला	23
श्री माधवराव सिंधिया	23—24
श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी	24—25
डा. जयन्त रंगपी	25
कुमारी ममता बनर्जी	26
श्री सनत कुमार मंडल	26—27
श्री जय प्रकाश	27
मंत्रियों का परिचय	30—32

लोक सभा

गुरूवार, 23 मई, 1996/2, जयेष्ठ, 1918 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11.01 बजे समवेत हुई।

[सामयिक अध्यक्ष महोदय (श्री इन्द्रजीत गुप्त) पीठासीन हुए]

[अनुवाद]

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण-जारी

अध्यक्ष महोदय : महासचिव उन सदस्यों के नाम पुकारेंगे जिन्होंने अभी तक शपथ नहीं ली है या प्रतिज्ञान नहीं किया है।

श्रीमती शारदा टाडी पारथी (तेनाली)

श्री वांगचा राजकुमार (अरुणाचल पूर्व)

डा. मदन प्रसाद जायसवाल (बेतिया)

श्री थामस हंसदा (राज महल)

श्री रामचन्द्र वीरप्पा (बीदर)

श्री जी. मल्लिकार्जुनप्पा (दावनगेरे)

श्री के. एच. मुनियापा (कोलार)

श्री ओस्कार फर्नान्डीज (उदीपी)

श्री एस. बंगरप्पा (शिमोगा)

कुमारी उमा भारती (खजुराहो)

श्री मनहरन लाल पाण्डेय (जंजगीर)

श्री मोहन विष्णु रावले (मुम्बई दक्षिण मध्य)

श्री पटेल प्रफुल्ल मनोहर भाई (भंडारा)

श्री कार्तिक महापात्र (बालासोर)

श्री बीजू पटनायक (आसका)

श्री गिरधर गमांग (कोरापुट)

श्री खगपति प्रधानी (नौरंगपुर)

श्री मृत्युंजय नायक (फूलबनी)

श्री कामाख्या प्रसाद सिंह देव (धेनकनाल)

महारानी दिव्या सिंह (भरतपुर)

श्री श्यामलाल बंसीवाल (टोंक)

श्री भेरू लाल मीणा (सलूम्बर)

श्री नाथूराम मिर्धा (नागौर)

श्री ए.एम. वेलु (अरकोणम)

श्री मानवेन्द्र शाह (टिहरी गढ़वाल)

डा. शफीकुर रहमान बर्क (मुरादाबाद)

श्रीमती मेनका गांधी (पीलीभीत)

श्री सत्यदेव सिंह (बलरामपुर)

श्री अजीत सिंह (बागपत)

श्रीमती सन्ध्या बौरी (विष्णुपुर)

श्री पुन्नु मोहले (बिलासपुर)

श्री चन्द्र शेखर (बलिया)

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, यहां उपस्थित सभी माननीय सदस्यों ने शपथ ले ली है अथवा प्रतिज्ञान कर लिया है। यदि कोई सदस्य ऐसे हैं जिन्होंने पहले अनुपस्थित रहने के कारण अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो वे बाद में शपथ ले सकते हैं। इसके लिए प्रबन्ध किए जायेंगे।

पूर्वाह्न 11.34 बजे

सदस्य द्वारा त्याग पत्र

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मुझे सभा को सूचित करना है कि 22 मई, 1996 को मुझे श्री पी.वी. नरसिंह राव, जो आन्ध्र प्रदेश में नांदयाल निर्वाचन-क्षेत्र और उड़ीसा में बरहामपुर निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित सदस्य हैं, से एक पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें उन्होंने आन्ध्र प्रदेश में नांदयाल निर्वाचन-क्षेत्र से त्याग पत्र दे दिया है। मैंने 23 मई, 1996 से उनका त्याग पत्र स्वीकार कर लिया है।

पूर्वाह्न 11.35 बजे

अध्यक्ष का निर्वाचन

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब हम अगला कार्य ले सकते हैं। अगला कार्य लोक सभा अध्यक्ष का निर्वाचन है। कई प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं और हम इन प्रस्तावों पर विचार प्रारम्भ करेंगे। सर्वप्रथम मैं मुरासोली मारन को अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए बुलाता हूं।

श्री मुरासोली मारन (मद्रास मध्य) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

> "कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री एन.वी.एन. सोमु (मद्रास उत्तर) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री बोल्ला बुल्ली रामय्या (एलुरू) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री उमा रेड्डी वेंकटेस्वरलु (बापतला) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : महोदय, मैं प्रस्ताव करती हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री मनोरंजन भक्त (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह) : मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री प्रिय रंजन दास मुंशी (हावड़ा) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

[हिन्दी]

श्री दिलीप सिंह भूरिया (झाबुआ) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

श्री विजय कृष्ण हान्डिक (जोरहाट) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री टी. सुब्बारामी रेड्डी (विशाखापटनम) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री पी.वी. नरसिंह राव (बरहामपुर) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री शरद पवार (बारामती) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री पी.एम. सईद (लक्षद्वीप) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री सन्तोष मोहन देव (सिल्चर) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री चतुरानन मिश्र (मधुबनी) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री रूपचन्द पाल (हुगली) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री पी. चिदम्बरम (शिवगंगा) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री एस.आर. बालासुब्रह्मण्यन (नीलगिरी) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री श्रीकान्त जेना (केन्द्र पाड़ा) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी) : महोदय, मैं निम्नलिखित प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री बेनी प्रसाद वर्मा (कैसर गंज) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री प्रमथेश मुखर्जी (बरहामपुर) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री ए.आर. अन्तुले (कोलाबा) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री गिरिधर गमांग (कोरापुट) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : मैं पहले श्री मुरासोली मारन द्वारा रखे गये प्रस्ताव को सभा में मतदान के लिए रखूंगा।

प्रश्न यह है :

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव पारित हुआ और श्री संगमा को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित घोषित किया जाता है।

अब, मैं प्रधान मंत्री, विपक्ष के नेता और अन्य दलों तथा ग्रुपों के नेताओं से अनुरोध करता हूं कि वे कृपया अध्यक्ष महोदय को अध्यक्षपीठ तक ले जायें और अपना कार्यभार संभालने में उनकी सहायता करें।

(सदन के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी, विपक्ष के नेता श्री पी.वी. नरसिंह राव और कुछ अन्य दलों और ग्रुपों के नेता श्री पूर्णो अगितोक संगमा को अध्यक्षपीठ तक ले गये।)

पूर्वाह्न 11.42 बजे

(श्री पूर्णो अगितोक संगमा, **अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुये**)

अध्यक्ष महोदय को बधाईयां

पूर्वाह्न 11.42 ¼ बजे

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में आपका अभिनन्दन करते हुये मुझे अत्यधिक आनन्द हो रहा है। आपका निर्वाचन सर्वसम्मत हुआ है। यह जहां आपकी लोकप्रियता का परिचायक है, वहां इस बात का भी संकेत है कि भारतीय लोकतंत्र और भारतीय लोकतंत्र की यह सबसे ऊंची प्रतिनिधि संस्था राजनैतिक भेदों के बावजूद महत्वपूर्ण प्रश्नों पर एक हो सकती है, मिलकर फैसले कर सकती है।

अध्यक्ष महोदय, आपको स्वतंत्र भारत में जन्म लेने का सौभाग्य मिला था। आप उस क्षेत्र से संबंधित हैं जिसे उत्तर-पूर्व के नाम से जाना जाता है। वहां भारत का महत्वपूर्ण भाग है मगर अपने को उपेक्षित अनुभव करता है। कभी-कभी वहां के निवासियों को लगता है कि हम केवल दिल्ली से हीं दूर नहीं हैं, हम दिल से भी दूर हैं। इस तरह की भावना पैदा होने का कोई कारण नहीं है और मुझे विश्वास है कि आपके निर्वाचन से इस भावना के कम होने में सहायता मिलेगी।

आपने अनेक दायित्वों को संभाला है। आपको हमने अनेक रूपों में, अनेक रंगों में देखा है। शायद ही केन्द्रीय सरकार का कोई विभाग हो जो आपके कुशल हाथों से संवारा नहीं गया है। श्रम मंत्री के रूप में आपकी जो लोकप्रियता रही, आपके विरोधियों ने भी उसका लोहा माना है। आप मुख्य मंत्री का दायित्व निभा चुके हैं।

आपके निर्वाचन से इस सदन की गरिमा बढ़ी है। महान ईसाई मत के एक निष्ठावान अनुयायी के नाते सहिष्णुता, बंधुता सबको साथ लेकर चलने का गुण, अब राष्ट्रीय स्तर पर एक पूंजी बनेगा। मुझे विश्वास है कि आपके नेतृत्व में सदन के अधिकार और सदस्यों के अधिकार सुरक्षित रहेंगे। भारत की जनता ने अपना निर्णय दे दिया, अब जनप्रतिनिधि कसौटी पर कसे जाने वाले हैं। जैसा मैंने कहा, लोक सभा सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था है। हमें सदन की गरिमा बनाये रखनी है। लोकतंत्र को अक्षुण्ण रखना है। मैं आज देख रहा हूं, कुछ हमारे पुराने मित्र फिर से निर्वाचित हुए हैं। अपने स्थान पर बैठने की बजाय, सदन के मध्य की ओर बढ़ने का उनका जो आकर्षण है, वह अब जरूर कम होगा। हम गरिमा से सदन का काम चलायें, इस बात की आवश्यकता है। जहां कहीं हम भटके, आप हमें नियंत्रित कर सकते हैं। आप हमें सही राह पर ला सकते हैं। आपको सबको साथ लेकर चलना है। हम आपकी हृदय से सफलता चाहते हैं और आपको पूरा सहयोग इस कार्य में देंगे, यह आपको आश्वासन देना चाहते हैं। एक बार फिर आपका अभिनंदन, आपको बधाई।

[अनुवाद]

श्री पी.वी. नरसिंह राव (बरहामपुर) : अध्यक्ष महोदय, मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि आप सभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गए हैं। सर्वसम्मति इस चुनाव का मूलतत्व है और मैं इस भावना का तहे दिल से स्वागत करता हूं क्योंकि इससे आपको निष्कर्षों पर पहुंचने में बहुत आसानी होगी और आपको अत्यधिक शक्तियों तथा कार्यसाधकता भी मिल गई है, जो कि अन्यथा अति कठिन होता।

मैंने आपको विभिन्न पदों पर अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए अत्यन्त नजदीक से देखा है। आपने प्रत्येक पद पर अत्यन्त सफलतापूर्वक कार्य किया है। मुझे याद है कि जब आप मेघालय के मुख्य मंत्री थे तो आपको विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। मुझे स्मरण है कि भारत के श्रम मंत्री के रूप में कार्य करते हुये आपको किन-किन गम्भीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। परन्तु, आपने अति दक्षतापूर्वक कार्य किया और आप भारत के अति सफल श्रम मंत्री साबित हुये। जब आपने श्रम मंत्री का पद भार सम्भाला था तब परिस्थितियां इतनी कठिन थीं कि अगर आप जैसा प्रतिभाशाली और कुशल श्रम मंत्री नहीं होता तो सम्पूर्ण नीति ही विफल हो जाती। इसलिये, मुझे प्रसन्नता है कि आपकी प्रतिभा के अनुरूप ही आपका उस स्थान के लिए चयन किया गया है जहां आपकी प्रतिभा की अत्यन्त आवश्यकता होगी और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने वर्तमान दायित्वों का निर्वहन अपनी पूर्ण प्रतिभा एवं क्षमता से सफलतापूर्वक कर पायेंगे।

मैं आपका स्वागत करता हूं और सदस्यों से अनुरोध करना चाहता हूं कि वे आपको सभा की गरिमा बनाए रखने में सहयोग दें। मुझे विश्वास है कि आप भी सभा की गरिमा बनाए रखना चाहेंगे और संसदीय लोकतन्त्र की उत्कृष्ट परम्पराओं को कायम रखते हुये सभा के कार्य को संचालित करने का हर सम्भव प्रयास करेंगे।

मैं आपका पुनः स्वागत करता हूं।

श्री शिवराज वी. पाटिल (लातूर) : अध्यक्ष महोदय, यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि सभी राजनीतिक दलों के नेताओं और वास्तव में सभा के सभी सदस्यों ने आपको सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन कर अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया है। श्री पूर्णो ए. संगमा, आपको विश्व के महानतम लोकतन्त्र की महान लोक सभा का पीठासीन अधिकारी चुना गया है। वे सब उन लोगों, जो कि संसदीय लोकतंत्र की प्रथा में विश्वास रखते हैं, की प्रशंसा के पात्र हैं।

अध्यक्ष महोदय, आप देखने में कम उम्र के लगते हैं परन्तु आप अत्यन्त अनुभवी नेता हैं। आपने राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर कई जिम्मेदार पदों पर कार्य किया है। आप अत्यन्त सहृदय, बुद्धिमान, सहयोगी, संतुलित और व्यावहारिक नेता हैं। आप इस महान सभा की गरिमा को कायम रखेंगे इसे समृद्ध करेंगे तथा भारत में लोकतंत्र और संसदीय प्रणाली को सुदृढ़ करेंगे। इस कठिन जिम्मेदारी को पूरा करने में आपको सभा के सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सम्पूर्ण सभा आपको भरपूर सहयोग देगी।

अध्यक्ष को विधि संबंधी, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मामलों से निपटना पड़ता है, तथा अचानक उभरने वाले मामलों से भी निपटना पड़ता है। इन सब मामलों में आपका सहानुभूतिपूर्ण निष्पक्षतापूर्ण और युक्तिसंगत दृष्टिकोण आपकी सहायता करेगा। इस सभा ने अब तक परम्परा यही रही है कि उसने इसी प्रकार का रवैया अपनाकर कार्य किया है और मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी यही तरीका अपनाया जायेगा।

मैं आपके ग्यारहवीं लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में सफल कार्यकाल की कामना करता हूं और आपको इस प्रतिष्ठित एवं उच्च पद पर आसीन होने के लिये हार्दिक बधाई देता हूं।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव (मधेपुरा) : अध्यक्ष जी, ग्यारहवीं लोक सभा में, इस देश की सबसे बड़ी पंचायत में, जबकि देश चुनौतियों से घिरा हुआ है, ऐसे दौर में एकराय से, एकमत से, जो विश्वास पूरे सदन ने आप पर व्यक्त किया है, वह समूचे राष्ट्र के लिये गौरव की बात है, खुशी की बात है।

इस सदन में मैंने कई वर्ष गुजारे हैं लेकिन आप इस सदन में जिस क्षमता, शक्ति, कुशलता और बुद्धिमानी से अपने काम को निष्पादित करते रहे हैं, हम सब लोगों की टेढ़ी से टेढ़ी समस्या को आसान करके जिस तरह आप हमें जवाब देते रहे हैं, कई बार हम लोग सदन में अपोजीशन के नाते, आपके तर्कों से पूरी तरह कन्विन्स हो जाते थे और सदन से बाहर निकलकर सोचते थे कि ठीक नहीं हुआ। आपने यहां अपनी काबलियत, अपनी सलाहीयत से जिस क्षमता, कुशलता और बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है, वह तारीफ के योग्य है।

स्वर्गीय डा. लोहिया के हम सब लोग अनुयायी हैं। वे नौर्थ ईस्ट इलाके को भारत का सागर माथा कहते थे, जिस इलाके से आप आते हैं– हिमालय का नाम उस इलाके में सागर माथा है।

और आज इस सदन में आप सागरमाथा पर ही बैठे हैं। मैं सोचता हूं कि इस राष्ट्र को आपकी अगुआई में एक ऊंचाई मिलेगी और इस गरीब, लाचार, बेबस भारत राष्ट्र को मजबूत करने की शक्ति इस संसद में आपके तहत मिलेगी तथा आप आने वाले समय में हिन्दुस्तान की सारी समस्याओं के निदान के रास्ते पर इस देश को ले जायेंगे। आपके चुनाव से हिन्दुस्तान के गरीब का सिर ऊंचा हुआ है और इससे राष्ट्र की एकता मजबूत हुई है। इन सब बातों के साथ समूचे सदन ने जिस तरह से प्यार और स्नेह से आपका नाम स्वीकार किया है वह इतिहास में अनोखा है। मैं इस अवसर पर भूतपूर्व अध्यक्ष जी ने जिस तरह से यहां पांच साल बिताये हैं उसके लिए भी उनको धन्यवाद देता हूं। उन्होंने कई मौकों पर बड़ी कुशलता और चतुराई का परिचय दिया है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी पार्टी की तरफ से और सदन के सभी सदस्यों की तरफ से आपको इस ऐतिहासिक अवसर पर मुबारकबाद देता हूं और इस बात की कामना करता हूं कि आने वाले इतिहास को आप मोड़ पायेंगे।

[अनुवाद]

श्री मुरासोली मारन (मद्रास मध्य) : महोदय, यह हमारे लिये अति गौरव की बात है कि आप भारत की इस महान संसद के अध्यक्ष पद पर आसीन हुये हैं। आपका सर्वसम्मति से चुना जाना न सिर्फ सभा के अन्दर के राजनीतिक समीकरणों का द्योतक है अपितु आपकी सम्मोहक प्रतिभाओं का भी द्योतक है, जिनकी वजह से सभी ने आपको स्वीकार किया है।

महोदय, आपने अनेक जिम्मेदारियों को श्रेष्ठतापूर्वक निभाया है। आप एक अध्यापक व विधिवक्ता भी रह चुके हैं और इस के अलावा आप मेरे समान पत्रकार भी हैं। आप मेघालय के एक बहुत अच्छे मुख्य मंत्री भी रह चुके हैं तथा इसके अलावा दो वर्षों तक विपक्ष के नेता के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। इसलिये, मैं आपको विपक्ष की भावनाओं से अवगत कराने की आवश्यकता नहीं समझता हूं। इसलिये, मुझे विश्वास है कि आप विपक्ष के साथ उचित व्यवहार ही करेंगे।

महोदय, यह सभा भारत के साधारण आदमी जिसने मतदान केन्द्र में जाकर मतपत्र पर स्याही लगाकर हम सभी को चुना है को मुबारकबाद और धन्यवाद देना चाहती है। भारत के महान आम नागरिक ने हमको विश्व के महानतम लोकतंत्र की प्रतिष्ठा को बनाए रखने में गौरवपूर्ण भूमिका अदा की है।

महोदय, आपके समक्ष गम्भीर चुनौतियां हैं। जनता ने किसी भी दल को अपनी बुद्धिमता के अनुसार पूर्ण बहुमत नहीं दिया है। इससे आपका कार्य और भी कठिन हो गया है क्योंकि कोई भी नहीं चाहता है कि देश में तुरन्त पुनः चुनाव हों। महोदय, इससे यह आवश्यक हो

गया है कि यह सभा और आप कार्य का संचालन इस प्रकार करें कि ज्वलंत समस्याओं की तरफ ध्यान दिया जाए। मैं आपको यह स्मरण कराना चाहता हूं।

महोदय, मेरे आपको सहयोग का आश्वासन देने का अर्थ यह नहीं है कि हम अपना मुंह बन्द रखेंगे और अपने स्वर को नीचा रखेंगे क्योंकि यदि कोई दृष्टिकोण कायम होता है तो वह केवल एक सदस्य की आवाज नहीं होगी बल्कि इस आवाज में उन लाखों लोगों की भावनाओं की अभिव्यक्ति निहित है जिनका हम प्रतिनिधित्व करते हैं। महोदय मैं आपसे यह अनुरोध करना चाहता हूं कि आपका ध्यान आकर्षित करने के लिये उठने वाली प्रत्येक आवाज की तरफ आप ध्यान दें। चाहे वह पीछे के बैंचों से आये या आगे के बैंचों से आये। हम यहां पर अपने निर्वाचन तथा अपनी उपस्थिति को न्यायोचित ठहराने के लिये हैं। इसलिये, मैं इस संबंध में आपके सहयोग की अपेक्षा रखता हूं।

मध्याह्न 12.00 बजे

महोदय, यह प्रश्न हमेशा उठता रहा है कि अध्यक्ष को किसी भी दल से संबद्ध होना चाहिये या नहीं। मुझे लोक सभा के प्रथम अध्यक्ष, डा. मावलंकर, के भाषण की याद आ रही है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि वर्तमान राजनीतिक और संसदीय प्रणाली में ब्रिटेन की संसद के अध्यक्ष की तरह सभा के अध्यक्ष का निष्पक्ष बने रहना सम्भव नहीं है। परन्तु, जो कोई भी अध्यक्ष पद पर आसीन होगा वह राजनीतिक रूप से असंबद्ध रहेगा अर्थात् दल के विचार-विमर्श और विवादों से स्वयं को अलग रखेगा। अध्यक्ष बनने मात्र से उसकी राजनीतिक स्थिति समाप्त नहीं हो जाएगी। इसलिये, यह स्पष्ट है कि अध्यक्ष गैर-राजनीतिक व्यक्ति नहीं हो सकता लेकिन उसे निश्चित रूप से किसी राजनीतिक पार्टी से संबद्ध नहीं होना चाहिए। मैं आशा करता हूं कि कोई भी उसको दलगत राजनीति में उतरने के लिये मजबूर नहीं करेगा। वह दलगत राजनीति से ऊपर रहेगा।

महोदय, अध्यक्ष का दायित्व देश को चलाना नहीं है। अध्यक्ष का दायित्व सभा का कुशल संचालन करना है। इसलिये, मैं आशा करता हूं कि आप इसके योग्य साबित होगे और सभी के साथ न्याय करेंगे।

महोदय, हमारे मार्ग निर्देशन के लिये नियम और विनियम हैं। परन्तु जैसा कि भूतपूर्व अध्यक्ष ने कहा कि सिर्फ नियमों से काम नहीं चलने वाला है क्योंकि सभा की संरचना बिल्कुल भिन्न है। मेरे विचार से आपको निरंकुश नहीं होना चाहिये। सिर्फ आम सहमति और परस्पर सहयोग से ही समस्या का समाधान किया जाना चाहिए। इसलिये, मैं चाहता हूं कि आप अपनी बात पर अटल रहें लेकिन इसके साथ-साथ आप निष्पक्ष भी हों। यह कठिन नहीं है। मेरे विचार में अरस्तु ने ही कहा था कि 'मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है।' परन्तु हम राजनीतिक पशु नहीं हैं। हममें राजनीतिक भिन्नताएं, मतभेद जरूर हैं, परन्तु इसके साथ-साथ एक दूसरे के राजनीतिक व्यक्तित्व का परस्पर बहुत सम्मान करते हैं। हम उचित सारगर्भित चर्चा तथा वाद-विवाद के पक्षधर हैं।

महोदय, हम गम्भीर चुनौतियों के द्वार पर खड़े हैं। हम इतिहास के एक अहम मोड़ पर खड़े हैं और मैं आशा करता हूं कि यह सभा सामूहिक बुद्धिमता से राष्ट्र के समक्ष गम्भीर चुनौतियों का दृढ़तापूर्वक सामना करेगी।

महोदय, मैं आपको पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं और मेरे विचार से ग्यारहवीं लोक सभा अति सफल सिद्ध होगी।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बालपुर) : अध्यक्ष महोदय, आज यहां आपको शुभकामनाएं और बधाई देने में मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

इस सभा में आपका सर्वसम्मत चुनाव स्पष्ट रूप से आपके गुणों को दर्शाता है और इस सर्वसम्मत चुनाव पर यहां सभी दलों का सहमत होना एक उचित निर्णय है।

महोदय, मुझे, सदस्य के साथ-साथ मंत्री के रूप में भी आपके कार्य-निष्पादन और उपलब्धियों को देखने का अवसर मिला है। और आपकी विनम्रता के अतिरिक्त हम जिस बात से सदा प्रभावित हुए हैं वह यह है कि आप दूसरों की बातों को खुले दिल से सुनते रहे हैं और यदि आवश्यक हुआ और अच्छे तर्क पेश किए गए, तो आपने अपना निर्णय भी बदला है। मुझे अधीनस्थ विधान संबंधी समिति, जिसके आप सदस्य थे और मुझे अध्यक्ष पद पर सम्मान मिला था, में विचार-विमर्श के दौरान आपका सक्रिय और समर्थ रूप से भाग लेना भी याद है। और, जब हम मेघालय गए उस समय आपकी मेहमाननवाजी मुझे याद है। एक सदस्य होने के नाते आप इसकी व्यवस्था कर सकते थे और कई मायनों में यह हमारे लिए बहुत फायदेमंद था।

अध्यक्ष महोदय, आप भारत के उस पूर्वोत्तर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जो कई कारणों से देश की मुख्य धारा से अपने आपको अलग महसूस कर रहा है और मुझे इस बात की खुशी है कि आज हमारा महत्व भी बढ़ गया है और सारे देश के अतिरिक्त पूर्वोत्तर भारत की समस्याओं और मुद्दों को आपने सदैव उजागर किया है और इसमें आपकी भूमिका को सभी स्वीकार करते हैं।

महोदय, हम जानते हैं कि इस सदन में विभिन्न दलों की स्थिति ऐसी है कि कई समस्याएं हो सकती हैं और हमें आशा है कि आपके नेतृत्व और मार्गदर्शन में हम उनका समाधान कर पायेंगे। हमें अपनी महान परंपराओं को बनाये रखना है।

इस सभा में सदस्य इस देश की आम जनता की आशाओं और आकांक्षाओं इच्छाओं को अभिव्यक्त करते हैं। इस सभा में विपक्ष के सदस्य भी हैं, लेकिन उन्हें भी जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों के रूप में अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करना है और इस सभा के सदस्य के रूप में कार्य करना है। स्वाभाविक रूप से, मुझे विश्वास है कि आपकी अध्यक्षता में इस सभा के सभी पक्षों, विशेष रूप से पिछली सीटों पर बैठे हुए सदस्य, जिन्हें बैक बैंचर्स के नाम से बुलाया जाता

है, को अपने विचार रखने तथा अपने क्षेत्र की समस्याओं का उल्लेख करने का पूर्ण अवसर मिलेगा।

हमने यहां हंगामे की स्थितियां देखी हैं। लेकिन वह भी जनता के सामने आ रही समस्याओं को ही दर्शाता है। हंगामे का अर्थ यहां निश्चय ही अध्यक्षपीठ के प्रति असम्मान दर्शाना नहीं है, लेकिन कभी-कभी हमें ऐसे तरीके अपनाने पड़ते हैं जो इस सभा में बिल्कुल उचित प्रतीत नहीं होते। चूंकि मैं आपके वर्षों से जानता हूं और समितियों में आपके साथ काम करने का भी विशेषाधिकार मिला है, अतः मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपको उस विश्वास पर खरे उतरेंगे जिसे सदस्यों ने आपमें दर्शाया है, और आपकी गणना सदन के श्रेष्ठ अध्यक्षों में की जायेगी।

महोदय, मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से आपको पूर्ण सहयोग का वचन देता हूं और मुझे विश्वास है कि आप इस सभा की कार्यवाही चलाने में सभी प्रकार से समर्थ होंगे और आपका कार्यकाल शानदार होगा। अध्यक्ष महोदय, हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

श्री पी. चिदम्बरम (शिवगंगा) : अध्यक्ष महोदय, आपके अध्यक्ष के रूप में चुने जाने पर मैं आपको शुभकामनाएं और बधाई देता हूं। शायद यह अध्यक्ष का एक अत्यंत अनूठा चुनाव है। यहां एकत्रित लगभग 500 सदस्य इस अत्यधिक अनूठे चुनाव के साक्षी हैं। मैं इस चुनाव पर टिप्पणी नहीं करना चाहता क्योंकि हम सभी को उन परिस्थितियों की जानकारी है जिनके अन्तर्गत अध्यक्ष के रूप में आपको चुना गया है।

एक मायने में यह काफी जटिल जनमत को प्रतिबिंबित करता है जो जनता ने हमें इस चुनाव में दिया है। आज तथा आने वाले दिनों में हम सभी जनादेश पर, जनादेश के अर्थ पर तथा उसकी जितनी व्याख्याएं हो सकती हैं, उन पर बोलेंगे। फिर भी एक बात स्पष्ट हो गई है कि कोई भी दल, कोई भी नेता इस देश के भाग्य का फैसला करने के लिए स्वयं को एकमात्र अधिकारी होने का दावा नहीं कर सकता। अगर यह संदेश समझने में राजनीतिक दल पीछे रह गए थे, तो जनता हमसे आगे थी और उन्होंने बड़े अच्छे तरीके से यह घोषणा की है कि हम सभी को मिलकर काम करना चाहिए। हमने एक-दूसरे के विरुद्ध चुनाव लड़ा होगा लेकिन जनादेश असहमति के बजाय मिलकर काम करने, इकट्ठा बैठने और समझौता करने, आपसी बातचीत के द्वारा उन तरीकों की खोज करने का है, जिन पर हम सहमत हो सकते हैं। तथापि उससे दसवीं अथवा नौवीं लोक सभा के मुकाबले, ग्यारहवीं लोक सभा कुछ कम कोलाहलपूर्ण नहीं होगी। मैं यह वायदा नहीं कर सकता कि हम अपनी आवाज नहीं उठायेंगे। यहां कोई भी यह वायदा नहीं कर सकता कि यदा-कदा हम सभा पटल के पास नहीं जायेंगे। यहां कोई यह वायदा नहीं कर सकता कि वह आपके द्वारा दिए गए विनिर्णय पर अंगुली नहीं उठायेगा, यहां कोई भी अच्छे व्यवहार का वायदा नहीं कर सकता। लेकिन महोदय, एक पुराने मित्र के नाते, मुझे विश्वास है कि आप अध्यक्ष पद की प्रतिष्ठा बढ़ायेंगे क्योंकि स्वभाव से ही आप समझौता करने वाले व्यक्ति हैं। आपका स्वभाव अपने दुश्मनों से भी समझौता करने का है। अतः, मैं समझता हूं कि आप आने वाले पांच वर्षों के दौरान सभा में जो उथल-पुथल का माहौल उत्पन्न होगा, उसे सामान्य बनाने का प्रयास करेंगे।

महोदय, मेरे सहयोगी सदस्य ने सदन के नेता और विपक्ष के नेता द्वारा अध्यक्ष महोदय को अध्यक्षपीठ तक ले जाने की परंपरा की याद दिलाई। मेरे विचार में ऐसी परंपरा तब शुरू हुई थी, जब कोई भी अध्यक्ष बनने का इच्छुक नहीं था और इसीलिए प्रधान मंत्री तथा विपक्ष के नेता को किसी सदस्य पर दबाव डालकर उसे अध्यक्ष बनाना पड़ा। यह पुरानी ब्रिटिश परंपरा है जिसे हमने संशोधित किया है और हम बड़े सभ्य तरीके से आपको अध्यक्षपीठ तक लेकर जाते हैं। अध्यक्ष स्वयं नहीं बोलता; वह औरों की सुनता है; वह अनकहे रूप में सर्वसम्मति उत्पन्न करता है; वह सभा को इस सर्वसम्मति पर पहुंचने का अनुरोध करता है, वह सभा से लोगों की भावनाओं को प्रकट करने का अनुरोध करता है।

महोदय, एक अन्य कारणवश मैं आपका अभिवादन करता हूं। महोदय, आप इस अध्यक्ष पद के लिए आने जाने वाले सबसे कम आयु के व्यक्ति होंगे। आप उस पीढ़ी का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जिससे मैं संबंध रखता हूं। आप किसी युवा पीढ़ी को इस देश की बागडोर संभालनी चाहिये और आपके अध्यक्ष पद पर पहुंचने से वह परिवर्तन आयेगा। और संभवतः आप ऐसे पहले अध्यक्ष होंगे, जो स्वतंत्रता आंदोलन के पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्ति के समय पैदा हुए हों। अगर आप एक वर्ष बाद पैदा हुए होते तो आपको 'मिडनाइट चाइल्ड' कहा जाता। आप स्वतंत्रता-प्राप्ति के समय ही पैदा हुए थे। महोदय, मेरे विचार में आप उस शांतिप्रिय और सुन्दर राज्य, का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसके अद्भुत लोग हैं तथा जो कई वर्षों बाद मुख्य धारा में शामिल हुआ था। उस विस्मृत लघु भारत के विचारों और महत्वाकांक्षाओं को किसी अन्य व्यक्ति के मुकाबले आप ज्यादा अच्छे ढंग से अभिव्यक्त करेंगे। संपूर्ण देश में छोटे-छोटे धर्म, छोटे-छोटे समुदाय और छोटे-छोटे राज्य हैं लेकिन उनमें से प्रत्येक इस देश की महानता को बढ़ाता है । महोदय आपके उस पद तक पहुंचने में, आपके चुनाव पर मैं उस लघु भारत, छोटे राज्यों के लोगों, अल्पसंख्यक आदिवासियों और छोटे-छोटे समुदायों के लोगों का अभिवादन करता हूं, परिस्थितिवश जिनकी पहुंच और जिनकी भूमिका बहुत छोटी है। किसी लघु वस्तु का सम्मान करके हम वास्तव में भारत की सभी महान वस्तुओं का ही सम्मान करते हैं।

महोदय, एक बार पुनः, मैं अपने दल, तमिल मनीला कांग्रेस की ओर से आपको बधाई देता हूं, आपका अभिनन्दन करता हूं और पूरे सहयोग का वादा करता हूं।

श्री बोल्ला बुल्ली रामय्या (एलुरू) : अध्यक्ष महोदय, मैं, आपको सर्वसम्मति से लोक सभा का अध्यक्ष चुने जाने पर अपनी तथा अपने दल तेलगूदेशम की ओर से हार्दिक बधाई देता हूं। इससे पहले आप मेघालय के मुख्य मंत्री रह चुके हैं तथा श्रम मंत्री और सूचना तथा प्रसारण मंत्री भी रह चुके हैं। यह सब क्रार्यभार बहुत

कठिन होने के बावजूद आपने अपने दायित्व को बड़ी बखूबी से निभाया। मुझे आशा है कि आप सदन की कार्यवाही सुचारू रूप से तथा गरिमापूर्ण ढंग से चलाने में कामयाब होंगे तथा सभी सदस्यों को अपनी बात रखने का अवसर देंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं महोदय, कि मेरे तथा मेरे दल की ओर से इस सदन को चलाने में आपको पूरा सहयोग मिलेगा।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (मिदनापुर) : महोदय, मैं इसे बहुत खुशी तथा विशेषाधिकार की बात समझता हूं कि अचानक ही ऐसा हुआ कि आपके इस उच्च पद पर चुने जाने की घोषणा करने का अवसर मुझे मिला जिसे आपने इस सदन में सर्वसम्मति से हासिल किया है।

ऐसा कहा जाता है कि बिल्ली की आयु बहुत लम्बी होती है। शायद मैं अपने जीवनवृत्ति के चरम पर पहुंच रहा हूं।

यह मेरे लिए दोगुनी खुशी का विषय है कि महोदय इस सभा द्वारा आपको सर्वसम्मति से चुना गया है और आज मैं महसूस कर रहा हूं कि यह सारे देश के लिए खुशी की बात है और विशेषकर उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के लोग प्रसन्नता, खुशी तथा गौरव का अनुभव कर रहे होंगे कि भारत की संसद के उच्च पद पर आप आसीन हैं। मैं इसे देश के संघीय ढांचे के लिए एक शुभ संकेत मानता हूं। यह बहुत आवश्यक है और महत्वपूर्ण है। इस तथ्य के बावजूद कि आप अल्पसंख्यक समुदाय, एक जनजातीय समुदाय, तथा ईसाई समुदाय से हैं यह सब बातें बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो गई हैं। आज जबकि हमारा देश एक कठिन संकट के दौर से गुजर रहा है, अपनी पहचान का संकट, एक आम राष्ट्र की पहचान का संकट, ऐसे समय में मेरी राय में यह बहुत आवश्यक है कि सभा इस प्रकार के संकेत दे।

मैं, इसलिए विपक्ष में बैठे अपने साथियों सहित, इस सभा के सभी वर्गों का आभारी हूं कि उन्होंने ऐसा निर्णय लेने में अपना सहयोग दिया। महोदय, मैं आपकी विशेषताओं के विस्तार में जाना नहीं चाहता हूं। मैं अपने जीवन के अधिकांश समय तक ट्रेड यूनियन से जुड़ा रहा हूं और मैं जानता हूं कि आज श्रमिक वर्ग भी आप जैसे श्रम मंत्री का लोक सभा अध्यक्ष चुने जाने पर प्रसन्नता अनुभव कर रहा होगा जो कि स्वयं श्रमिक वर्ग के अधिकारों के हिमायती थे। जैसा कि अभी किसी ने कहा है कि आपको कई विवादों में समझौता करवाने वाले तथा मध्यस्थ की भूमिका निभानी होगी, और अनेक मामलों में जहां आपने अपने आपको अनुकूल, मिलनसार, शालीन, हितैषी तथा उन सभी लोगों का मित्र साबित किया है जो आपसे यह चाहते हैं कि आप कुछ समस्याएं सुलझाने में उनकी मदद करें। वहीं मुझे उम्मीद है कि आप सभा में उसी तरह की भूमिका निभायेंगे। हाल ही में हम देख रहे हैं कि इस देश में न्यायपालिका द्वारा हस्तक्षेप किया जा रहा है। कुछ लोग इसे पसन्द करते हैं और कुछ लोग इसे पसन्द नहीं करते हैं। न्यायपालिका द्वारा यह हस्तक्षेप हाल ही में किया जाने लगा है, कम से कम हमें इस बात को तो स्वीकार करना चाहिए कि इसका आंशिक रूप से कारण विधानमंडल तथा कार्यपालिका द्वारा अपनी-अपनी भूमिकाओं को निभाने में असफल होना है । हमें इस बात को कुछ-कुछ स्वीकार कर लेना चाहिए। जिसके परिणामस्वरूप न्यायपालिका ने हस्तक्षेप किया और कई बार पहल भी की जिसके कई बार अच्छे परिणाम सामने आए और कई बार अच्छे परिणाम सामने नहीं भी आए। लेकिन हम इस सदन के सदस्य हैं हम संसद के सदस्य हैं और हमें तब गर्व महसूस होता है जब हमारी संसद अपनी अपेक्षित भूमिका निभाती है। इस देश निर्माण में अपनी प्रभुत्व सम्पन्न भूमिका निभाती है। मुझे उम्मीद है महोदय कि आप हमारा मार्गदर्शन कर सकेंगे और इसमें हमारी मदद कर सकेंगे कि हम अपनी जिम्मेवारी निभा सकें जो कि हमारे मतदाताओं ने हमें सौंपी है। मैं यह कहना चाहूंगा कि मोटे तौर पर मेरी गणना गलत हो सकती है, लगभग आधे मतदाताओं, ने मतदान नहीं किया है। लेकिन हमें इस बात पर विचार-विमर्श करना चाहिए। हमें इस बात पर चर्चा करनी चाहिए कि क्या कई कारणों से उदासीनता की भावना व्याप्त है जिसने अनेक लोगों के दिमाग को जकड़ा हुआ है। हो सकता है ऐसा आंशिक रूप से विश्वास की कमी तथा इस संस्था की बढ़ती हुई अविश्वसनीयता के कारण हो।

यदि ऐसा है, तो हमें कुछ आत्ममंथन करना होगा और देखना होगा कि हम इसमें कितने दोषी हैं। यह स्वंय में सुधार लाने का समय है, यह इस संसद की मौलिक गरिमा तथा प्रतिष्ठा को पुर्नस्थापित करने का समय है।

हमें उम्मीद है कि इस कार्य के लिए हम आपको अपना पूरा सहयोग देंगे आप संसद का ऐतिहासिक तथा संवैधानिक रूप से नियत मार्ग पर उसका मार्ग दर्शन करने में सफल होंगे।

हम आपको हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन देते हैं तथा आपकी सफलता की कामना करते हैं। मैं अपने तथा अपने दल की ओर से आपकी सफलता पर अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी) : अध्यक्ष महोदय, आपका चुनाव सर्वसम्मति से हुआ है इसके लिए हम और पूरा सदन प्रसन्न हैं। हम आपको बधाई देते हैं और अपनी शुभ-कामनायें भी पेश करते हैं, क्योंकि यह विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक पद्धति से चुनी हुई संस्था है। इसकी जिम्मेदारी आपको मिली है। इस जिम्मेदारी को आप निभायेंगे, ऐसी मुझे पूरी आशा है। क्योंकि आपकी योग्यता और आपका अनुभव यह दर्शाता है कि पूरा सदन आपके नाम पर सहमत हुआ है। पहली बार हम देख रहे हैं, क्योंकि हम पहली बार यहां चुनकर आये हैं कि हिन्दुस्तान के अंदर विपक्ष के रूप में जो बैठे हैं, उनकी तरफ से आप सर्वसम्मति से इस पद पर पहुंचे, यह आपकी योग्यता और आपकी क्षमता का ही प्रतीक है।

जहां तक आपके अनुभव का और योग्यता का सवाल है, आप कई प्रधान मंत्रियों के साथ काम कर चुके हैं, विभिन्न पदों पर भी रह चुके हैं और श्रम मंत्री भी रहे हैं। इसलिए श्रमिकों की समस्याओं के बारे में आपको काफी अनुभव है। उनका समाधान इस सदन के माध्यम से करने में आपका पूरा-पूरा सहयोग रहेगा। अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से और अपने सदस्यों की तरफ से मैं पूरा सहयोग देने का वादा करता हूं। मुझे विश्वास है कि जितनी बड़ी जिम्मेदारी

आपको मिली है, उस जिम्मेदारी को निभाते हुए हमारे सदन के सदस्यों के अधिकार भी सुरक्षित रहेंगे।

ऐसे बहुत से मौके आयेंगे जब आप महसूस करेंगे कि आपकी इच्छा के अनुकूल सदन नहीं चल रहा है या कोई माननीय सदस्य अपनी बात कहने पर अड़ा हुआ है, तब आप यह नहीं समझेंगे कि आपके बारे में, आपके सम्बन्ध में या इस पद के सम्बन्ध में कोई शंका या अविश्वास है। जिस जनता ने हमें जिस विश्वास के साथ चुना है उसकी भावनाओं को यहां रखना सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारे माननीय सदस्यों की होती है। केवल समस्याओं को रखना ही नहीं, उनके लिए संघर्ष करना भी जिम्मेदारी है। ऐसे मौके पर आपका संयम रहेगा, यह मुझे विश्वास है।

देश की जो वर्तमान समस्या है या राजनैतिक संकट है, यह कोई राजनैतिक संकट नहीं है, एक प्रक्रिया है। इसी से एक शक्ति उभरकर देश के सामने आयेगी। हम लोग निराश नहीं हैं, चाहे एक दल का बहुमत हो या नहीं हो, सभी दल मिलकर काम करें, लेकिन इस प्रक्रिया के अंदर हिन्दुस्तान में एक बड़ी शक्ति निकलेगी जो हिन्दुस्तान की समस्याओं को, गरीबों की जो आजादी के बाद उम्मीदें थीं, दलितों और अल्पसंख्यकों को जो मौका मिलना चाहिए था वह नहीं मिल सका है। लेकिन मुझे खुशी है कि आप मेघालय, पूर्वोत्तर के निवासी हैं, जो कभी अपने को उपेक्षित समझते थे। आज वे महसूस करेंगे कि हिन्दुस्तान में उनका भी महत्व है, उनकी जिम्मेदारी है और अधिकार है।

आपको एक गरिमापूर्ण और निर्भीकतापूर्ण काम करने वाला उत्तरदायित्व और एक शक्तिशाली पद मिला है। उसमें हम अपनी तरफ से पूरा सहयोग करेंगे। इसी वादे के साथ हम आपको पुनः बधाई देते हैं, शुभकामनाएं देते हैं।

[अनुवाद]

श्री चित्त बसु (बारसाट) : महोदय, इस महान लोकतांत्रिक संस्था का अध्यक्ष चुने जाने पर मैं प्रधान मंत्री तथा इस सभा के अन्य गणमान्य सदस्यों के साथ अपने आपको संबद्ध करते हुए हृदय से आपका अभिनन्दन करता हूं।

महोदय, आप राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पदों पर रहे हैं। हम, मजदूर संघ और फैक्ट्रियों, खानों तथा अन्यथा कार्य कर रहे मजदूरों के रूप में, आपकी उस भूमिका को नहीं भूल सकते जो आपने देश के श्रम मंत्री के रूप में निभाई। आपकी भूमिका सदा एक समझौतेवादी की रही है। आपने हमेशा लोगों को, श्रमिक वर्ग को एक करने की भूमिका निभायी है न कि उनको विभाजित करने की। यहां, इस सभा में विविध वर्गों के सदस्य हैं। यहां बड़ी-बड़ी राष्ट्रीय पार्टियां हैं, छोटी-छोटी पार्टियां हैं, कुछ अन्य छोटी पार्टियां भी हैं और बहुत छोटे ग्रुप भी हैं। यहां अपने हितों के कारण मतभेद हैं, यहां अपने-अपने वर्ग के हितों के कारण मतभेद हैं, यहां विभिन्न मतभेद हैं जो कि हमेशा सभा पटल पर प्रतिबिम्बित होते हैं। यह सभा पटल समाज के विभिन्न वर्गों का आईना है और हम इस आईने की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। यदि हम इस आईने की उपेक्षा करते हैं तो इसका अर्थ है हम पूरे राष्ट्र की उपेक्षा कर रहे हैं। आज का श्रमजीवी वर्ग काफी संकट का सामना कर रहा है और मैं समझता हूं कि आने वाले दिनों में श्रमजीवी वर्ग को काफी संघर्ष करना पड़ेगा और वह संघर्ष यहां प्रतिबिम्बित होगा। आपके पूर्व अनुभव के आधार पर मुझे उम्मीद है और विश्वास है कि अपने आर्थिक, राजनैतिक और अन्य अधिकारों की रक्षा के लिए बाहर चल रहे श्रमजीवी वर्ग तथा मजदूर संघों के आन्दोलनों पर विशेषकर आपके द्वारा इस सभा में पर्याप्त ध्यान दिया जायेगा।

महोदय, मेरे विचार में आप देश के विभिन्न भागों में कार्य कर रहे हमारे लाखों जनजातीय लोगों की स्थिति से भी अवगत होंगे। वे मेहनत कर रहे हैं, पसीना बहा रहे हैं और कठिन जीवन व्यतीत कर रहे हैं। महोदय, इस उच्च पद पर आपका चुनाव जनजाति तथा अल्पसंख्यक समुदाय से संबंध रखने वाले लाखों लोगों को संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित करेगा ताकि वे सम्मान से जीवन व्यतीत करने के अधिकार को प्राप्त कर सकें जिससे कि वे वंचित हैं।

महोदय, आप एक महत्वपूर्ण धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। महोदय, अल्पसंख्यकों को दबाया नहीं जा सकता। अल्पसंख्यकों के भी अधिकार हैं। एक महान प्रजातंत्र में, प्रजातंत्र की विशेषता अल्पसंख्यकों को प्रदान की गई गारंटी सापेक्ष स्थिति पर निर्भर करती है। मुझ आशा है कि इस तरफ बैठे मेरे साथी हमारे समाज में अल्पसंख्यकों के महत्व को समझेंगे। हमारा समाज मिश्रित प्रकृति का है तथा इसे कोई एकात्मक भूमिका अदा नहीं करनी होती है। हमारा समाज बहुमुखी प्रकृति का है, अतः इसके बहुमुखी पहलुओं का भी ध्यान रखना होगा।

महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि पूर्वोत्तर क्षेत्र वास्तव में हमारे राष्ट्र का अत्यधिक सामरिक महत्व का क्षेत्र है। आज हम यह महसूस करते हैं कि पूर्वोत्तर आंचल की जनता का पृथक्कीकरण लगातार बढ़ता ही जा रहा है। आपके इस पद पर प्रतिष्ठित होने से उन्हें यह एहसास होगा कि भारत को उनकी आवश्यकता है तथा उन्हें भी भारत की जरूरत है।

भारत में पूर्वोत्तर क्षेत्र के लाखों लोगों की उम्मीदों एवं आकांक्षाओं को ध्यान में रखा जाता है। मैं उम्मीद करता हूं तथा मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि आपके इस उच्चपद पर आसीन हो जाने से, पूर्वोत्तर क्षेत्र को देश से अलग-थलग रखे जाने की प्रवृत्ति रूक जायेगी।

महोदय, मैं इस सभा में एक अत्यंत छोटे-से समूह का प्रतिनिधित्व करता हूं और यह स्वाभाविक ही है कि हमें कई बार दुखी होना पड़ता है। दुखी इसलिए होना पड़ता है क्योंकि हमें अपनी भावनाओं एवं विचारों को व्यक्त करने का पर्याप्त समय नहीं मिलता। विचार तो विचार ही होते हैं। यह न तो क्षेत्रीय होते हैं और न ही पक्षपातपूर्ण होते हैं तथा न यह छोटे होते हैं एवं न ही बड़े। विचार तो विचार ही होते हैं तथा इन्हें स्वतंत्र तथा निष्पक्ष रूप से व्यक्त करना होता है।

महोदय, मुझे आशा है तथा मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि आपके हमेशा मस्कुराते रहने के इस स्वभाव से, जब भी हम स्वयं को उदास, निराश तथा दबा हुआ महसूस करेंगे, तो हमारे चेहरे पर भी मुस्कराहट आ जायेगी। मुझे आशा है कि हम इस सभा की परम्पराओं को बनाये रखेंगे तथा इस सदन में अनुशासन कायम रखने में सहयोग देंगे। एक बार फिर, मैं अपने दल की ओर से आपको बधाई देता हूं।

श्री बीरेन्द्र प्रसाद वैश्य (मंगलडोई) : अध्यक्ष महोदय, मुझे आज आपको अपनी तरफ से तथा अपने दल–असम गण परिषद की ओर से सहृदय पूर्वक बधाई देते हुए अत्यंत खुशी हो रही है। भारत के राजनैतिक इतिहास में पहली बार लोक सभा के माननीय अध्यक्ष पूर्वोत्तर क्षेत्र से निर्वाचित हुए हैं।

महोदय, आज का दिन पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण दिन है। अध्यक्ष का पद तटस्थ होता है। अतः, मुझे शत प्रतिशत विश्वास है कि इस माननीय सभा में अध्यक्ष महोदय की तरफ से प्रत्येक सदस्य के साथ समतुल्य व्यवहार किया जायेगा। हम इस देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र से संबद्ध हैं। हमारा क्षेत्र अत्यंत पिछड़ा क्षेत्र है, अतः मैं, आपसे यह अनुरोध करना चाहता हूं कि आप इस क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने की ओर विशेष ध्यान दें।

[हिन्दी]

श्री नारायण दत्त तिवारी (नैनीताल) : सम्मानित अध्यक्ष महोदय, मैं अन्तर के अंतःस्थल से आपको हार्दिकतम बधाइयां देना अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि आप निर्विरोध सर्वसम्मति से इस सर्वोच्च पद पर चुने गए हैं। आप जनतंत्र के वर्तमान अध्याय में 11वीं लोकसभा के संगठन कं बाद लोकतंत्र के प्रहरी के रूप में निर्वाचित हुए हैं । मैं प्रधान मंत्री जी, नेता विरोधी दल और अन्य सभी दलों के नेताओं व सदस्यों को बधाई देता हूं कि आज उन्होंने 11वीं लोक सभा के प्रारम्भ में ही यह दिखाया है कि राजनीतिक झंझावातों के रहते हुए भी आज हम सर्वसम्मत चुनाव कर सकते हैं। राजनैतिक सर्वानुमति के आधार पर कार्य कर सकते हैं। आज यह हमने विश्व को दिखाया है, जो चिन्तित था कि हम किस प्रकार व कैसे आज के राजनैतिक परिवेश में, सामाजिक परिवेश में, आर्थिक परिवेश में अपने देश की राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान कैसे निकाल सकते हैं। आज इस प्रश्न का उत्तर इस प्रारम्भिक सर्वानुमति से ही जो देने का प्रयास आपके माध्यम से इस सम्मानित सदन ने किया है, सभी सम्मानित सदन के सदस्य बधाई के पात्र हैं।

श्रीमन, इन्द्रधनुषी राजनीति की बहुरंग आज इस सदन में परिलक्षित हो रहा है और इस इन्द्रधुनषी राजनीति में भी एक रंग हो कर जलती हुई समस्याओं के समाधान में भी यथासंभव सर्वानुमति हो सकेगी, यह विश्वास हमें होना चाहिए। आपके चुनाव से यह विश्वास जागृत होता है। श्रीमन्, आपके जीवन के चढ़ावों और उतारों को हमने देखा है और मुझे तो सौभाग्य प्राप्त हुआ है, आपको एक सांसद से, एक कार्यकर्ता के रूप में उठते हुए देखने का कि राजनितिक मंच पर आप कैसे आगे बढ़े हैं। मुझे विश्वास है, आपमें वे गुण हैं कि मेघालय के मेघों के बीच में, मेघों के गर्जन, तर्जन और बिजली के बीच में भी सौम्यतापूर्वक समान व्यवहार भी बरसात करने की शक्ति आपमें है, मेघालय का नाम ही मेघ+आलय है, आप वहां से आए हैं।

मुझे विश्वास है कि आपकी अध्यक्षता में संसदीय पद्धति के ऐसे मेघ बरसेंगे जो सब के साथ समान भाव से व्यवहार करेंगे, फिर चाहे कहीं–कहीं वैचारिक सूखा ही क्यों न हो लेकिन वे सब के बीच में समान भाव से व्यवहार करेंगे।

श्रीमन्, इस सदन की अपनी बहुत–बहुत पुरानी कहानियां, अनुभव और परम्पराएं हैं । पूर्व में अध्यक्ष के सर्वोच्च पद पर चाहे यहां मावलकर जी बैठे हों, चाहे अय्यंगर जी बैठे हों और चाहे भारत की स्वतंत्रता से पहले परम सम्मानित स्वर्गीय विट्ठल भाई पटेल जी बैठे हों, तब से ऐसी मान्यताएं है, ऐसे नियम हैं, ऐसी अवधारणाएं है, रूलिंग्स हैं जो कि वर्तमान सदन में अपने दायित्वों को पूरा करने में आपको सहायता देंगे। मुझे विश्वास है कि आप अपने अनुभव से अत्यंत कठिन समय में भी अपनी संसदीय परम्पराओं का पालन करेंगे। यहां पर इस सदन में दशकों से सेवा कर रहे अन्य संसदीय परम्पराओं के मर्मज्ञ विद्यमान हैं। यह बड़ी खुशी और प्रसन्नता की बात है कि यहां पर इस सदन में संसदीय परम्पराओं के भिज्ञ अनुभवी बैठे हैं, जिन्होंने संसद को चलाने में कई दशकों से अपना पूरा योगदान दिया है, सभी दलों में ऐसे विद्धान यहां पर हैं और जो नयी पीढ़ी की 21वीं सदी के सपने लिए युवा नेता चुन कर आए हैं मुझे विश्वास है कि वे भी संसदीय परम्पराओं में पके और रंगे हुए हैं, उन युवक सांसदों का भी आपको सहयोग मिलेगा।

श्रीमन्, जो नये सांसद आए हैं उनमें बहुत से ऐसे हैं जिन्हें विधान सभाओं का विशाल अनुभव है। उनमें से कई मुख्य मंत्री या मंत्री भी रह चुके हैं। उनका विधान सभाओं में, नगर समितियों में, जिला परिषदों में तथा ग्राम पंचायतों में भी योगदान रहा है और इस प्रकार जो नये हैं वे भी नियमों में पड़े हुए है– उन्हें भी संसदीय परम्पराओं का अनुभव है। मुझे विश्वास है कि आपको इन सब का योगदान मिलेगा। महोदय, आपके अध्यक्ष–काल में 11वीं लोक सभा अपना पूरा समय व्यतीत करते हुए संसदीय लोकतंत्र की नयी मान्यताएं संसार और पूरे देश के सामने प्रस्तुत करेगी और 20वीं सदी से 21वीं सदी में जो नया चुनाव होगा वहां तक ये 11वीं लोक सभा नए–नए मानदंड और सफलता के नये केतन इस देश में और विश्व के रंगमंच में प्रजातांत्रिक, सविधान की मर्यादाओं की रक्षा करते हुए फहराएगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

इन शब्दों के साथ मैं इतना पुनः आपसे कहना चाहता हूं जैसाकि मैंने आपको प्रारम्भ में कहा कि मैं अंतर के अंतरंतर से आपको बधाईयां देता हूं।

[अनुवाद]

श्री पी.सी. थामस (मुवत्तुपुजा) : महोदय, मैं आपको इस माननीय सभा का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई देता हूं।

महोदय, आपका राजनीति, प्रशासन, संसद एवं विधान सभा में लम्बा अनुभव होने के कारण मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अब तक के सर्वश्रेष्ठ अध्यक्षों में से एक होंगे। मुझे विश्वास है कि आप इस सभा में हरेक सदस्य का समर्थन पाने में सफल होंगे। जैसा कि यहां अधिकतर सदस्यों ने व्यक्त किया है, हमें आपमें एक बहुत अच्छी विशेषता यह पायी है कि आप एक अच्छे मध्यस्थ एवं वार्ताकार हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं यह महसूस करता हूं कि आप अत्यंत सज्जन पुरूष हैं। कार्डिनल न्यूमैन ने एक बार 'भद्रपुरूष' शब्द की परिभाषा की थी तथा उनके अनुसार 'एक भद्रपुरूष वह है जो दूसरों को कष्ट नहीं पहुंचाता।' मैं समझता हूं कि आप इतने भद्र पुरूष हो सकते हैं कि इस परिभाषा पर खरे उतरें। यदि आप इतने भद्र हैं, तो इस सभा के सदस्यों को इससे भी ज्यादा भद्र बनना पड़ेगा, ताकि वे इस ढंग से आपको सहयोग दे सकें कि इस सभा का कार्य सफलता से चल सके। मुझे विश्वास है कि आपके परिपक्व दृष्टिकोण तथा व्यापक अनुभव से, आप इस सभा के सभी सदस्यों को अपने विश्वास में ले पायेंगे।

इस सभा में प्रत्येक वर्ग द्वारा व्यक्त किए गए विचार महत्वपूर्ण हैं चाहे वह विचार बड़े दलों की ओर से व्यक्त किए गए हों या छोटे दलों द्वारा विपक्ष की ओर से किए गए हो अथवा सत्तारूढ़ दल की ओर से। जैसा कि श्री चित्त बसु तथा अन्य सदस्य पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, छोटे दलों द्वारा व्यक्त किये गये विचारों पर भी विचार किया जाना चाहिए क्योंकि वे भी किसी निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुझे विश्वास है कि मेरी पार्टी जैसी और भी छोटी पार्टियां होंगी। सबसे छोटी एक सदस्यीय पार्टी केरल कांग्रेस (एम.) का सदस्य होने के नाते, मैं आपसे यह प्रार्थना एवं निवेदन करता हूं कि छोटे दलों के सदस्यों को भी सम्मान दें।

महोदय, जैसा कि कहा ही गया है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा अन्य क्षेत्रों में भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। मैं इस देश के सुदूर दक्षिण हिस्से से चुनकर आया हूं। हमारी भी अनेक समस्याएं हैं। मुझे विश्वास है कि आप इस क्षेत्र के किसानों, कामगारों एवं गरीब व्यक्तियों को, जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनका वर्णन करने का हमें मौका देंगे।

महोदय, मैं आपको पुनः बधाई देना चाहता हूं। महोदय दूर से अध्यक्षपीठ फूलों की सेज जैसी दिखाई देती है, लेकिन मुझे विश्वास है कि ऐसी बात नहीं है। यह कांटों भरी सेज है तथा इसपर बैठना कोई आसान काम नहीं है। तथापि, हमें आशा है कि आप अपने विशिष्ट स्वभाव से, कांटों को फूलों में – कमल के फूलों में नहीं अपितु गुलाब के फूलों में परिवर्तित कर पायेंगे...**(व्यवधान)**

महोदय, मैं आपको पुनः बधाई देता हूं। अन्ततः, मुझे न केवल आपको बल्कि इस सभा को समग्र रूप से एक बात कहनी है। मेरी तथा यहां उपस्थित सभी सदस्यों की यह इच्छा है कि आप पूरे पांच वर्ष तक अध्यक्ष के पद पर बने रहें। मुझे विश्वास है कि ऐसा कहने में मैं इस सभा के प्रत्येक सदस्य की मनोभावना को व्यक्त कर रहा हूं।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला (संगरूर) : अध्यक्ष महोदय, अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी की ओर से, मैं आपको सर्वसम्मति से ग्यारहवीं लोक सभा का अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई देता हूं।

हम सभी यहां अपने निर्वाचन क्षेत्र, अपने राज्यों, अपने क्षेत्रों की समस्याएं तथा राष्ट्रीय समस्याएं लेकर आये हैं। इन सभी समस्याओं पर यहां समय-समय पर चर्चा होगी तथा आपको उन पर महत्वपूर्ण निर्णय लेने होंगे। इस बार चुनावों के परिणामों का इस सभा में अत्यंत पेचीदा नमूना सामने आया है। किसी भी दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिला है। किसी भी दल को अन्य दलों की तुलना में पर्याप्त बहुमत भी नहीं मिला है। आपको इस अत्यंत कठिन स्थिति का सामना करना है तथा इसी वजह से जिस किसी ने भी आपको बधाई दी है, उसने यही कहा है कि सभा में आपका कर्त्तव्य काफी कठिन होगा। लेकिन मुझे विश्वास है कि आप इन सभी कठिनाइयों को पार कर पायेंगे, क्योंकि आपको राजनैतिक जीवन-का राजनीति में प्रवेश करने से पहले का आपका जीवन तथा उसके पश्चात् अपने राज्य के मुख्य मंत्री के रूप में, भारत सरकार में एक मंत्री के रूप में तथा कुछ वर्षों तक विपक्ष में भी रहने के कारण-व्यापक अनुभव है। आपके पास सभा में निर्णय लेने के लिए जरूरी हर तरह का अनुभव है।

सभी राजनैतिक दलों ने आपको सर्वसम्मति से चुनकर एक बहुत अच्छा कार्य किया है। देश में जो स्थिति उत्पन्न हुई है, उसमें किसी को भी यह विश्वास नहीं है कि कल क्या होने जा रहा है। सत्ता पक्ष तथा इसके साथ-साथ विपक्ष की स्थिति की सुस्पष्ट जानकारी नहीं है। ...**(व्यवधान)**

श्री निर्मल कान्ति चटर्जी (दमदम) : हमें इस बारे में बिल्कुल साफ तौर पर पता है।..**(व्यवधान)**

श्री सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : किसी को भी स्थिति की सुस्पष्ट जानकारी नहीं है...**(व्यवधान)**...महोदय, मेरा यह सुझाव है कि राष्ट्र के सभी विख्यात नेताओं-जो निर्वाचित हुए हैं-को इकट्ठे बैठकर सर्वसम्मति से एक ऐसी सरकार गठित करनी चाहिये, जोकि पांच वर्षों तक चले। राष्ट्रीय सरकार अथवा इसी जैसे नमूने पर कोई सरकार गठित करने के लिए एक सर्वसम्मत दृष्टिकोण पर विचार किया जाना चाहिये। ऐसा करना आवश्यक है। अन्यथा यहां आपकी स्थिति हमेशा अत्यंत कठिन बनी रहेगी। हमें उम्मीद है कि सभा की आकांक्षाओं के अनुरूप आप स्वतंत्र और निष्पक्ष निर्णय लेंगे। हम पुनः आपको सहृदय से बधाई देते हैं।

[हिन्दी]

श्री नीतीश कुमार (बाढ़) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी और अपनी पार्टी की तरफ से आपके निर्विरोध निर्वाचन पर आपको बधाई देना चाहता हूं और आपका अभिनन्दन भी करना चाहता हूं।

इस सदन में आपकी जितनी प्रशंसा की गयी है, उससे बढ़-चढ़कर के प्रशंसा करना संभव नहीं है, इसलिये अब कोई आपकी प्रशंसा करके आपका ध्यान आकर्षित नहीं कर सकता है। हमने आपको एक मंत्री के रूप में काम करते हुये देखा है और आपको अंकसर हंसते

हुये पाया है। आप हंसमुख और खुश-मिजाज व्यक्ति हैं। उम्मीद है कि इस कुर्सी पर बैठकर भी आप हंसते रहेंगे और यह भी उम्मीद है कि आप हंसते हंसते सदस्यों के अवसर का गला नहीं काटेंगे। सदन की जो स्थिति या संरचना है, उसके हिसाब से कितनी दफा उत्तेजना होगी, कितनी दफा प्रतिकूल परिस्थिति आपके लिये आयेगी लेकिन उन तमाम परिस्थितियों का मुकाबला आपको करना होगा। इसलिये हम उम्मीद करते हैं कि उन परिस्थितियों का हंसते-हंसते मुकाबला करेंगे। हम यह भी उम्मीद करते हैं कि हम लोगों की तरह पीछे बैठने वाले सदस्यों को भी हंसते-हंसते अवसर देंगे। ऐसा न हो कि आप हंसते रहें और हम लोग अवसर से चूक जायें। जैसा कि आपका स्वभाव है कि हंसते रहते हैं, और कोई काम नहीं भी करते हैं तो भी हंसते रहते हैं, उसी तरह से उम्मीद है कि यदि आप सदस्यों को अवसर नहीं भी देंगे, तो भी हंसते रहेंगे और उन पर डांट-फटकार कम किया करेंगे, हमें पूरी उम्मीद है। हम यह भी उम्मीद करते हैं कि जो व्यक्ति अध्यक्ष की कुर्सी पर गया है, वह अपनी तरफ से पूरी कोशिश करेगा कि सदन की अवधि अधिक से अधिक हो। मैं नही जानता कि यह सदन पांच साल पूरा कर पायेगा या नहीं, इसके बारे में कोई गारंटी नहीं है क्योंकि जिस तरह से लोग बोल रहे हैं तो पता नहीं। अगर सचमुच में सदन की अवधि को पूरा रखना चाहते हैं तो जिस तरह से अध्यक्ष का सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ है, उसी प्रकार से श्री वाजपेयी जी को पूरे पांच साल तक के लिये चलने देंगे। अगर ऐसा अवसर आपने नहीं दिया तो इस बात को जान लीजिये कि यह सदन बहुत दिन तक नहीं चलने वाला है। वैसे हम पूरी उम्मीद करते हैं लेकिन पता नहीं। हमें उम्मीद है कि आप अपनी क्षमता और काबलियत के चलते इस सदन की अवधि अधिक से अधिक समय तक बढ़ाने के लिये अपनी तरफ से कोशिश करते रहेंगे और पूर्व अध्यक्ष माननीय शिवराज पाटिल की तरह ही आप 5 साल तक अध्यक्ष रहेंगे।

अध्यक्ष महोदय, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी तरफ से आपको पूरे सहयोग का वचन देते हुये आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि इस सदन की गरिमा को बरकरार रखेंगे और गरिमा में वृद्धि करते रहेंगे। मैं एक बार पुनः आपका अभिनन्दन करता हूं।

[अनुवाद]

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई-उत्तर पश्चिम) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं, अपने दल शिव सेना तथा अपनी ओर से, संसदीय प्रणाली में इस सर्वोच्च पद पर आसीन होने पर आपको बधाई देता हूं। इस सभा ने सर्वसम्मति से आपको अध्यक्ष चुना है। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि इस लोकतंत्र का भविष्य अत्यंत उज्जवल है। मुझे विश्वास है कि आपको पर्याप्त अनुभव प्राप्त है। आपने मेघालय राज्य के मुख्य मंत्री के रूप में कार्य किया। जैसा कि आप जानते ही हैं मेघालय का अर्थ 'बादल' होता है। जब संकट के बादल छाये हुए थे तब वहां के मुख्य मंत्री होने के नाते आपने कतिपय ऐसे तरीके ढूंढ निकाले जिससे अंततः राज्य का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा। महोदय, इस देश में तथा विशेषकर इस सभा में अब परिस्थिति कुछ उसी प्रकार की है। संकट के बादल चारों ओर मंडरा रहे हैं और इन परिस्थितियों में आप इस पद पर सुशोभित हुए हैं। मैंने यहां पर कई लोगों को आपका गुणगान करते सुना है। अन्ततः हर एक व्यक्ति आशा कर रहा है कि उसे न्याय मिले, उसे अपने विचार प्रकट करने का अवसर मिले और सभा का कार्य शांतिपूर्वक ढंग से संचालित हो। सर्वोपरि यह है कि यह सभा अगले पांच वर्षों तक कार्य करे।

महोदय, मुझे याद है कि श्री पी.जी. मावलंकर प्रथम लोक सभा के अध्यक्ष थे और श्री शिवराज वी. पाटिल, जो यहां उपस्थित हैं, दसवीं लोक सभा के अध्यक्ष थे। इस सभा में अब तक जो परम्पराएं रही हैं, उन्हें अक्षुण रखना होगा और इस सभा की गरिमा भी कम नहीं होनी चाहिए। ऐसी हमारी आशा है। मुझे विश्वास है कि आप इस स्थिति को बदलने नहीं देंगे।

महोदय, आपने मजदूर संघ के नेता के रूप में काम किया। आप इस देश के श्रम मंत्री रह चुके हैं और मैं भी इस देश के मजदूर संघ नेताओं में से एक होने के नाते जानता हूं कि श्रमिक वर्ग अनगिनत समस्याओं का सामना कर रहे हैं। कुछ अनुभवी मजदूर संघ नेताओं ने अपने भाषण में कहा है कि श्रमिक वर्ग के लिए मुसीबत के दिन अभी दूर नहीं हुये हैं और जब यह मुसीबत की घड़ी आएगी तो इस स्थिति से युक्तिसंगत ढंग से निपटना ही अध्यक्ष महोदय की अग्नि परीक्षा साबित होगी। यह आवश्यक है कि आप नये सदस्यों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करें। मुझे अध्यक्षपीठ का बहुत कम अनुभव है। मैं अपने राज्य में सभापतियों के पैनल में रहा हूं। मुझे इस बात का अनुभव है कि यह सभा कैसे कार्य करती है। इसको ध्यान में रखते हुए हम आपसे आपके मुस्कान भरे चेहरे के साथ सभा के सर्वोत्कृष्ट संचालन की उम्मीद करते हैं।

मैं जानता हूं कि ऐसे कई अवसर आएंगे जब सदस्य यह कहेंगे कि बातें स्पष्ट नहीं है। मैं समझता हूं कि सब के मन में स्थिति स्पष्ट है सिर्फ परिणाम आने की देरी है। परन्तु हर एक की यही इच्छा है कि सभा अगले पांच वर्ष तक चलें। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। यद्यपि आगे के दिन मुसीबत से भरे हुए हैं फिर भी आप उस परिस्थिति को सम्भालने में कामयाब रहेंगे और इस सभा में प्रत्येक सदस्य यहां तक कि नवनिर्वाचित सदस्य अथवा वे सदस्य, जो काफी अनुभवी हैं, उनके साथ भी आप समान व्यवहार करेंगे ताकि यह सभा सुचारू रूप से चल सके।

मैं, अपने दल शिव सेना तथा सभी संसद सदस्यों की ओर से आपको हार्दिक बधाई देता हूं और अगले पांच वर्षों तक के लिए आपकी शानदार सफलता की कामना करता हूं।

[हिन्दी]

श्री कांशी राम (होशियारपुर) : अध्यक्ष महोदय, आपके निर्विरोध चुने जाने पर मैं अपनी तरफ से तथा अपनी पार्टी की तरफ से स्वागत करता हूं। आपके बारे में, आज के माहौल के बारे में बहुत कुछ कहा जा चुका है। मैं और ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहूंगा। अपनी तरफ से तथा अपनी पार्टी की तरफ से आपको भरोसा दिलाना चाहता हूं कि हमारी तरफ से हमेशा आपको सहयोग मिलता रहेगा।

[अनुवाद]

श्री जी.एम. बनातवाला (पोन्नानी) : अध्यक्ष महोदय, अपने दल मुस्लिम लीग की ओर से तथा अपनी ओर से मैं आपको इस माननीय सदन का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। महोदय, आपने इस देश के संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में एक अत्यन्त नाजुक और निर्णायक मोड़ पर अध्यक्ष का पद संभाला हैं। अध्यक्ष पद पर आपका सर्वसम्मति से चुना जाना हमारे देश के संसदीय लोकतंत्र के इतिहास के निर्णायक स्वरूप को देखते हुए एक उज्जवल एवं अनुपम घटना है। मैं तो कहूंगा कि न केवल हमारे देश में बल्कि जिसका विश्व के अन्य लोकतंत्रों को भी अनुकरण करना चाहिए। विश्व के अन्य लोकतंत्रों के लिए भी आपका अध्यक्ष पद के लिए चुना जाना अनुकरणीय सुप्रभ अनुक्रिया को निरूपित करता है।

अध्यक्ष महोदय, आज सम्पूर्ण सभा आह्लादित है। हममें से कई सदस्यों ने इस उच्च पद पर सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर आपको काव्यात्मक भाषा में अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दी। आज आप इस देश में लोकतंत्र के संरक्षक के रूप में निर्वाचित हुए हैं और मुझे विश्वास है कि आप संसदीय लोकतंत्र की उच्चतम परम्पराओं को कायम रखेंगे जिसमें आपको हमारा पूरा सहयोग मिलेगा।

अध्यक्ष महोदय, जैसा कि मैंने कहा है आज सारा सदन तथा देश प्रसन्न है क्योंकि आपका अध्यक्ष पद पर चुना जाना विभिन्न स्वरूप में हमारे देश की एकता और अखण्डता को प्रतिबिम्बित करता है। आज सदन और देश के साथ-साथ अल्पसंख्यक भी प्रसन्न हैं क्योंकि एक ऐसे समय में आपका अध्यक्ष पद पर चुनाव हुआ है जब उनके मन में कई प्रकार की शंकायें उत्पन्न हो गई थी। अतः मैं अपने दल की ओर से आपको हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन देता हूं। हम यह भी जानते हैं कि आपसे इस सदन के प्रत्येक वर्ग को न्याय मिलेगा।

श्री माधव राव सिंधिया (ग्वालियर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको इस माननीय सदन का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। मैं समझता हूं कि संयुक्त मोर्चा, कांगेस दल, भारतीय जनता पार्टी, अन्य दल तथा अन्य सभी संसद सदस्य इस सर्वसम्मत चुनाव के लिए बधाई के पात्र हैं और मेरा विश्वास है कि आने वाले समय में सदन पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

अध्यक्ष महोदय, आपके सुशील, दक्ष एवं आकर्षक व्यक्तित्व ने इस पद को सुशोभित किया है। मैंने सदैव आपको भारतीय राजनीति के क्षितिज पर एक स्वावलम्बन नक्षत्र के रूप में देखा है तथा आप अपनी निष्पक्ष छवि के लिए जाने जाते हैं, जो कि मुझे विश्वास है कि आपके कर्त्तव्य के निर्वहन में प्रभावशाली सिद्ध होंगी। आश्चर्यजनक बात यह है कि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय जो कि द्वीप जैसा है, जिसने बड़े-बड़े जहाजों को डूबते हुए देखा है फिर भी आप ने बड़े साहसपूर्ण ढंग से इसका काम संभाला और सफलतापूर्वक कठिनाइयों से जूझते हुए इसे किनारे लगाया।

मुझे विश्वास है कि यह आपकी दक्षता एवं साहस का परिणाम है और शायद आप सौभाग्यशाली हैं कि सूचना और प्रसारण मंत्रालय में भी आपका कार्यकाल बहुत ही कम था।

अध्यक्ष महोदय, मुझे आपके सहयोगी के रूप में काम करने का सौभाग्य मिल चुका है। आपने विभिन्न पदों/विभागों पर जिस दक्षता एवं विनम्रता से कार्य किया है, मैंने इसका सदैव आदर किया है।

अपराह्न 1.00 बजे

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अध्यक्ष पद की गरिमा को बनाये रखेंगे। मुझे इस बात की विशेष प्रसन्नता है कि आप पूर्वोत्तर क्षेत्र के हैं। हमारा देश एक मोजेइक की भांति है। जैसा कि स्वर्गीय इन्दिरा गांधी सदैव कहती थी कि यह अनेकता में एकता का प्रतीक है। यदि कोई व्यक्ति इसे छेड़ने की कोशिश करता है तो इससे एकता कमजोर पड़ जाती है। इस एकता को और सुदृढ़ करने का एक ही रास्ता विविधता को पहचानना हैं । अध्यक्ष महोदय, आप इसी भावना तथा विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, और मुझे विश्वास है कि आपके कार्यकाल में इस महान देश की एकता और सुदृढ़ होगी।

अध्यक्ष महोदय, आपको एक कष्टप्रद कार्य सौंपा गया है। आप कई बार लोक सभा के सदस्य रह चुके हैं। मुझे विश्वास है कि आप समझते हैं कि आपको कितने सरल, स्पष्टवादी और हम सब लोगों को संभालना होगा। मुझे विश्वास है कि आप अपने लक्ष्य से नहीं हटेंगे। मैं आपको अपने और अपने दल का पूर्ण सहयोग का आश्वासन देना चाहता हूं तथा यह आशा करता हूं कि आप इस पद की गरिमा में चार चांद लगायेंगे।

[हिन्दी]

श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी (हैदराबाद) : जनाब स्पीकर साहब, मैं आपको अपनी पार्टी मजलिस-ए-इत्तहादुल मुसलमीन की तरफ से और अपनी तरफ से मुबारकबाद पेश करता हूं और उम्मीद करता हूं कि आपका दौर एक इन्कलाबी दौर से गुजरेगा। कुर्सियों पर बैठने वाले कभी इधर होंगे, कभी उधर होंगे। इख्तदार कभी इनके हाथ में जाएगा, कभी उनके हाथ में जाएगा और मुझे यकीन है कि आपका दौर एक तारीखसाज दौर होगा और यह दौर ऐसा रहेगा जिसमें शायर यह कहेगा :

आए भी वो, गये भी वो,
खत्म फसाना हो गया।

बहरहाल, स्पीकर साहब, मैं आपके दौर में यह चाहूंगा कि हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी अकलियत मुसलमान है, जिनके कुछ

मसाइल हैं, जो आजादी के बाद हमेशा लुटते पिटते रहे हैं। उन्हें हर पार्टी की तरफ से दिलासा दिया गया लेकिन कुछ काम नहीं हुआ। मुझे उम्मीद है कि इस ऐवान में, आपके जरिये उनके काम मुकम्मिल होंगे और वह जुबान जिसमें मैं आपको मुबारकबाद दे रहा हूं, उसे भी उसका हक मिलेगा।

अखिर में, अपने साबका स्पीकर साहब, जनाब शिवराज पाटिल का भी यकीनन मुझे नाम लेना चाहिये क्योंकि उन्होंने जिस सब्र और जब्त से काम लिया, वाकई वह तारीफदार काम रहा। मैं खामोशी से देखता था कि कभी भी उनके चेहरे पर झल्लाहट नहीं आई और बड़े सब्र और जब्त से उन्होंने काम किया, इसीलिये मैं उनको काबिल-ए-मुबारकबाद समझता हूं। आपसे मेरी उम्मीदें बाबस्ता हैं कि आप इस दौर में तमाम वो मुवाके फरहाम करेंगे और सब्र जब्त से काम करेंगे।

[अनुवाद]

डा. जयन्त रंगपी (स्वशासी जिला) : अध्यक्ष महोदय, आपने अपनी यात्रा अध्यापक की नौकरी से शुरू की, फिर आपने पृथक पर्वतीय राज्य आंदोलन में भाग लिया, फिर मुख्य मंत्री के पद पर रहे, उसके बाद केन्द्रीय मंत्री का दायित्व संभाला और अब अध्यक्ष पद पर आसीन हैं, जो आपकी महान व्यक्तिगत उपलब्धि है। अपनी ओर से तथा अपने दल, ऑटोनामस स्टेट डिमांड कमेटी की ओर से तथा पूर्वोत्तर के प्रत्येक नागरिक की ओर से मैं आपके अध्यक्ष निर्वाचित किये जाने पर आपको बधाई देता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस पृष्ठभूमि अर्थात किसी भी पार्टी का बहुमत न होने के बावजूद सर्वसम्मति से आपका चुनाव किए जाने पर पूर्वोत्तर का प्रत्येक नागरिक गौरवान्वित महसूस करेगा।

अध्यक्ष महोदय, राष्ट्र ने अलग-अलग जगह अलग-अलग राय व्यक्त की है और मुझे विश्वास है कि आप यह सुनिश्चित करेंगे कि इस सम्माननीय सदन में प्रत्येक दल की राय को सम्मान मिले। पूर्वोत्तर भाग की समस्याएं बहुत अधिक हैं और इस भाग से बहुत कम प्रतिनिधि आए हैं, जो इस विशिष्ट समस्या को उठाएंगे जिससे आप भली भांति अवगत हैं और मुझे इस पर कोई संदेह नहीं कि आपको इस मामले की जानकारी है और आप इस ओर ध्यान देने के लिए हर आवश्यक कदम उठायेंगे।

आप इस देश के प्रथम आदिवासी केन्द्रीय मंत्री हैं और इस दिन के लिए इस देश के आदिवासियों ने चार दशकों से भी अधिक समय तक प्रतीक्षा की है और आज आपको दोहरा सम्मान मिला है। आप इस राष्ट्र के प्रथम आदिवासी अध्यक्ष निर्वाचित किए गए हैं अतः मैं आपको पुन बधाई देता हूं और पूरा सहयोग देता हूं।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण मुझे खेद है हमें यहां रूकना होगा। मैं आप सबकी बधाई स्वीकार करूंगा।

रक्षा मंत्री और संसदीय कार्य मंत्री (श्री प्रमोद महाजन) : महोदय, एक महिला सदस्य को बोलना है।

अध्यक्ष महोदय : मेरे विचार से हमें एक महिला सदस्य को बोलने का अवसर देना होगा।

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : मैं बोलना चाहती हूं ....(व्यवधान)

श्री सनत कुमार मंडल (जयनगर) : महोदय, आर.एस.पी. को बोलने का अवसर नहीं मिला है।

अध्यक्ष महोदय : कौन सी पार्टी?

कुछ माननीय सदस्य : आर.एस.पी.।

कुमारी ममता बनर्जी : महोदय, मुझे बोलने की अनुमति दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : जी, हां।

कुमारी ममता बनर्जी : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज का दिन आपका है और आप सभी की ओर से बधाई के पात्र हैं। महोदय, मैं एक बात और कहना चाहती ,हूं कि आज मूल्यों पर आधारित राजनीति को बहाल करने की आवश्यकता है। यह सभा लोकतंत्र का सर्वोच्च मंत्र है और मैं समझती हूं कि अध्यक्ष पीठ से आप मूल्यों पर आधारित राजनीति को बहाल करने का आह्वान कर सकते हैं। इस देश की जनता तक यह संदेश पहुंचना चाहिए कि दिन प्रतिदिन बिगड़ती राजनैतिक स्थिति को और बिगड़ने से रोका जाना चाहिए। मूल्यों पर आधारित राजनीति को पुनः कायम करने के लिए इस सभा को मूल्यों पर आधारित कम से कम कुछ मामलों पर तो एकमत से और अपने अतःकरण की प्ररेणा से काम करना चाहिए। इसके साथ-साथ मैं आपको एक बात और बताना चाहती हूं। हमारा देश बहुत विस्तृत है। यहां कई भाषाएं बोली जाती हैं। अतः मैं कहना चाहती हूं कि

[हिन्दी]

त्याग का नाम हिन्दू है, ईमान का नाम मुसलमान
प्यार का नाम ईसाई, सिख का नाम बलिदान,
यह है हिन्दुस्तान।

[अनुवाद]

हमें अपने देश की इस एकता और अखंडता को पुनः कायम करना होगा।

श्री सनत कुमार मंडल : महोदय, मैं अपने दल आर.एस.पी. की ओर से तथा अपनी ओर से आपको 11वीं लोक सभा का अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई देता हूं। मैं आपको सभा की कार्यवाही चलाने में हर तरह से सहयोग देने का आश्वासन देता हूं और आपसे अनुरोध

करता हूं कि आप देश के लोकतंत्र के इस सर्वोच्च मंत्र में छोटे दलों के सदस्यों के साथ न्याय करेंगे। मैं आपसे वर्तमान सभा में असाधारण राजनैतिक परिस्थितियों में निष्पक्ष रूप से और कानून सम्मत ढंग से कार्य करने की भी अपील करता हूं ताकि उच्च लोकतांत्रिक मूल्यों तथा संविधान में निहित भावना को बनाए रखा जा सके।

[हिन्दी]

श्री जय प्रकाश (हिसार) : मैं अपनी तरफ से, हरियाणा विकास पार्टी की तरफ से आपका स्वागत करता हूं और साथ में सभी माननीय संसद सदस्यों का भी स्वागत करता हूं क्योंकि आज सदन में किसी एक पार्टी का बहुमत नहीं है, लेकिन उसके बावजूद भी सभी माननीय संसद सदस्यों ने और पार्टी के नेताओं ने आपको सर्वसम्मति से नेता चुना है इसलिए मैं सभी साथियों का और सदन का बहुत-बहुत आभारी हूं।

हमारी साथी नितीश कुमार जी कह रहे थे कि इसी तरह की हमारी परम्परा आगे रहे, क्योंकि आज सारे देश में, सारी दुनिया में अखबारों के माध्यम से चर्चा चली हुई है कि हिन्दुस्तान की ग्यारहवीं लोक सभा कब तक चल पायेगी। सभी माननीय संसद सदस्यों ने जिस तरीके से सर्वसम्मति से आपको चुना उसी तरीके से इस हाउस की गरिमा को आगे बढ़ाते हुए देश का संचालन करे, क्योंकि सारे देश की जनता ने आप सब लोगों के कंधों पर बहुत बड़ा भार सौंपा है। आप 90 करोड़ लोगों के प्रतिनिधि यहां बैठे हैं, इसलिए मैं सभी माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि आप लोग देश के लोगों के जो विचार हैं, देश की जनता ने जो जनादेश दिया है, उसको मद्दे नजर रखते हुए इस सदन को पांच वर्ष तक चलाएं। वरना इस देश की जनता हमें और आप लोगों को यह कहेगी कि ये लोग भेजे थे संसद को चलाने के लिए और ये बीच में ही, आपसी मतभेद के कारण वापस चले आए। सारा देश आज आपके चेहरे की तरफ निगाह लगाए बैठा है। बहुत से ऐसे लोग और शक्तियां हैं जो बेमेल हैं, लेकिन कोशिश करेंगी कि यह लोक सभा बीच में ही टूट जाए। हमारे जो नए सदस्य हैं या जो दूसरी बार चुनकर आए हैं, वे तथा अन्य सभी चाहते हैं कि यह लोक सभा पांच साल चले।

अध्यक्ष महोदय, हमारा दल बहुत छोटा है और मैं आशा करूंगा कि आप हमारे दल को भी उतना ही समय देंगे जितना बड़े दलों को दिया जाता है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद, मैं जानता हूं कि अनेक माननीय सदस्य इस चर्चा में भाग लेना चाहेंगे लेकिन अब मध्यान्ह भोजन का समय भी समाप्त होने वाला है। मैं आप सबका धन्यवाद करता हूं, मैं उन सबका धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मुझे मुबारकबाद दी।

माननीय सदस्यगण, हमारे महान देश के निवासी जो कि विश्व की 20 प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं, उन्होंने शान्तिपूर्ण मतदान के माध्यम से 11वीं लोक सभा को चुना है। इस सभा के सदस्यों ने सम्पूर्ण राजनैतिक तानेबाने, क्षेत्रीय और सांस्कृतिक भिन्नता तथा यहां तक कि शक्ति समीकरण से हटकर अपनी अभूतपूर्व सर्वसम्मति से मुझे अपना पीठासीन अधिकारी चुनकर अद्वितीय सम्मान दिया है मैं आप सबके प्रति अपना आदर-भाव अभिव्यक्त करता हूं।

मैं सभा के सभी वर्गों द्वारा अभिव्यक्त की गई उदार भावनाओं से भावविह्वल हो गया हूं। आज हम बीसवीं शताब्दी के कगार पर पहुंच रहे हैं तो विश्व के कई देश अभी तक लोकतंत्र की ओर मुड़ने की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं और उन्हें यदाकदा दुखदायी सामाजिक और राजनैतिक उथल पुथल का सामना करना पड़ रहा है। आज जबकि हम यहां एकत्र हुए हैं तो हम अपनी लोकतांत्रिक जड़ों के प्रति अपनी वचनबद्धता को और विश्वसनीय बना रहे हैं।

आज जबकि मैं इस अध्यक्ष पद पर आसीन हो रहा हूं तो मैं अपने राष्ट्र के विट्ठलभाई पटेल और दादा साहेब मावलंकर जैसे उन महान नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने इस सभा की परम्पराओं का निर्माण किया और निसन्देह मुझे उनसे प्रेरणा मिलेगी।

लोक सभा लोकतंत्र का एक गरिमापूर्ण सदन है। हम सब का यही आदर्श होना चाहिए कि हम सब इसे पवित्र पूजा स्थल का दर्जा दें। इस सभा में चर्चा और मतभेद बिना किसी मनमुटाव के परस्पर सौजन्य और सम्मान से ओतप्रोत होना चाहिए।

इस सभा में जनादेश और मूल निदेशपथ से आशय विधि व्यवस्था से है। यह सब विधिव्यवस्था से ही सम्भव हो पाता है जिससे हम जनता की अभिलाषा की अभिव्यक्त करते हैं, नीतियां निर्धारित करते हैं, कानून राज की स्थापना करते हैं। समय चूंकि कम है इसलिए हमें उसी कम से कम समय में कल्याणकारी शासन के संदर्भ में सर्वोत्कृष्ट प्रतिफल प्राप्त करना होगा।

हम सभी जमीन से जुड़े लोग हैं और सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम लोगों की भावनाओं को समझते हैं। मुझे विश्वास है कि हम अपने सामूहिक विवेक और अनुभव से सभा की कार्यवाही को समृद्ध करेंगे ताकि हमारे वाद-विवाद की प्रतिष्ठा और गुणवत्ता बनी रहे।

इस सभा की संरचना के माध्यम से जनता ने जो निर्णय दिया है उससे बहुत सी आकांक्षाएं तथा आशंकाएं उभरने लगी हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी सामूहिक रूप से अपने दायित्व का निर्वहन करेंगे ताकि जनता की आकांक्षाओं को पूरा किया जा सके और उनकी आशंकाओं को दूर किया जा सके। इस संदर्भ में मैं आपको यह

आश्वासन देता हूं कि मेरा यह भरसक प्रयास रहेगा कि मेरे दायित्वों के निर्वहन का मार्ग पारदर्शी एवं निष्पक्ष भावना से प्रशस्त हो इस प्रकार मैं सभी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का समान अवसर प्रदान कर सकूंगा।

निसन्देह संसदीय कार्य काफी गम्भीर होता है लेकिन इसके लिए तनावग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं हैं । हमें पंडित नेहरू, पीलू मोदी, बलराज मधोक, महावीर त्यागी, जगजीवनराम आदि जैसे विगत वर्षों के विख्यात सांसदों के हास्य प्रसंगों से प्रेरणा लेनी होगी। हास्य प्रसंगों से घनिष्ठता पैदा होती है और घनिष्ठता से आपसी सूझबूझ बढ़ती है।

इस सभा की कार्यवाही को सुगम और व्यवस्थित संचालन को सुविधाजनक बनाने में, लोक सभा सचिवालय पर्दे के पीछे से बड़ी अहम भूमिका अदा करता है। मैं अपने कर्त्तव्यों को प्रभावशाली ढंग से निभाने के लिए इस सचिवालय के अनुभव और सहयोग को भी प्राप्त करता रहूंगा।

संचार माध्यम सभा और जनता के बीच एक कड़ी का कार्य करते हैं। मैं जनता तक सभा की कार्यवाही के सार्थक प्रस्तुतीकरण में इनका भी सहयोग लूंगा।

माननीय सदस्यगण आप सबने मुझ पर विश्वास करके इस सभा को मेरी देख रेख में चलाने के लिए मुझे निर्वाचित किया है। अपनी ओर से मैं आपको यह आश्वासन देता हूं कि मैं आपकी आस्था में खरा उतरने और आपकी उम्मीदों को पूरा करने का भरपूर प्रयास करूंगा।

अपराह्न 1.18 बजे

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण–जारी

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, इस समय सभा में शपथ लेने के लिए तीन और सदस्य यहां उपस्थित हैं। मैं महासचिव से अनुरोध करूंगा कि उन्हें शपथ लेने के लिए बुलाया जाए।

श्री निहाल चन्द (गंगानगर)

श्री महेन्द्रसिंह भाटी (बीकानेर)

श्री के.सी. कोडय्या (बेल्लारी)

अपराह्न 1.20 बजे

मंत्रियों का परिचय

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब मैं प्रधान मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि वे सभा को मंत्रिपरिषद के सदस्यों का परिचय दें।

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने सहयोगियों का आपको और आपके माध्यम से सभा को परिचय देता हूं :

श्री सिकन्दर बख्त	विदेश मंत्री और शहरी कार्य तथा रोजगार मंत्री
श्री सूरजभान	कृषि मंत्री
श्री राम जेठमलानी	विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्री
डा. मुरली मनोहर जोशी	गृह मंत्री
श्री वी. धनन्जय कुमार	नागर विमानन और पर्यटन मंत्री
श्री प्रमोद महाजन	रक्षा मंत्री और संसदीय कार्य मंत्री
श्री कड़िया मुण्डा	कल्याण मंत्री
श्री सुरेश प्रभु	उद्योग मंत्री
श्री सरताज सिंह	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री
श्री जसवंत सिंह	वित्त मंत्री
श्रीमती सुषमा स्वराज	सूचना और प्रसारण मंत्री

[हिन्दी]

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : अध्यक्ष जी, मेरा प्वाइंट ऑफ इन्फौर्मेशन है। राष्ट्रपति का अभिभाषण सरकार की नीति को परिलक्षित करता है। इस सदन में 20 तारीख को एक कौन्फ्रीडैंस मोशन के संबंध में हमको आपके सैक्रिटेरिएट के थ्रू एक प्रस्ताव आया है। लेकिन इसमें कोई डेट नहीं है। यह मोशन नहीं है, लूज मोशन है। .....**(व्यवधान)** अध्यक्ष जी, मैं इस शब्द को विदड्रा करता हूं।.... **(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : यह लूज मोशन इनके लिए है, इनका पेट खराब हो गया है।....**(व्यवधान)**

श्री राम विलास पासवान : मैंने नियम 198 के तहत अविश्वास का प्रस्ताव दिया है। यदि सरकार सबसे पहले आज या परसों विश्वास का प्रस्ताव लाती है तो हमको कुछ नहीं कहना है। राष्ट्रपति का अभिभाषण सरकार की नीति को परिलक्षित करता है। क्योंकि यह

सरकार अल्पमत में है, यह सरकार अभी है ही नहीं, इसलिए हम आपसे आग्रह करेंगे कि पहले नो कौन्फीडैंस मोशन को लिया जाए। इस पर आपका क्या निर्णय है, यह मैं आपसे जानना चाहता हूं। ..(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए और मेरी बात सुनिए। संविधान में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि सत्र का प्रारम्भ राष्ट्रपति के अभिभाषण से शुरू होता है। इस मुद्दे का अनुच्छेद 87 में स्पष्ट उल्लेख है। कल और आज हमने जो कुछ किया है वह सभा के गठन की प्रक्रिया को ही पूरा किया है। सत्र का प्रारम्भ कल राष्ट्रपति के अभिभाषण से शुरू होगा, इसलिए आज हम कोई अन्य कार्यवाही संचालित नहीं कर सकते।

अब सभा कल राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घंटे पश्चात् पुनः समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 1.25 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा शुक्रवार 24 मई, 1996/3 ज्येष्ठ, 1918 (शक) को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घंटे पश्चात् तक के लिए स्थगित हुई।

पी. एल. एस.--48/1/2/96 (एन.)
250

© 1996 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (आठवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और डाटा प्वांईट, 615, सुनेजा टावर–II, डिस्ट्रिक्ट सैन्टर, जनक पुरी, नई दिल्ली–58 (फोन–5505110) द्वारा मुद्रित।